Dr.Sunita Kumari, Guest Asst Prof,
Dept of H.Sc
SNSRKS College, Saharsa
BA-Part-III(H.)

प्रौढ़ शिक्षा (वयस्क शिक्षा)
(Adult Education)

Dt 25/02/2022

प्रौढ़ शिक्षा अथवा समाज शिक्षा का उद्देश्य प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के साथ-साथ उनकी आत्मानुभूति जाग्रत करना, तथा उनमें नागरिकता एवं सामाजिकता की चेतना का विकास करना है। प्रौढ़ शिक्षा, औपचारिक शिक्षा का केवल उपचारिक समाधान (Remedial or second chance programme) नहीं है, बल्कि यह एक शिक्षा है, जो "addressed to adults, as adults; and designed to help them with life situations more successfully" है। यह वयस्कों के लिए अनौपचारिक ढंग की शिक्षा है जो "life long education" को आधार मानकर चलती है।

शिक्षा किसी के ज्ञान कौशल में सुधार करती है और व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को विकसित करती है। स्वतंत्रता के पश्चात देश में निरक्षरता उन्मूलन की दिशा में अनेक कदम उठाए गए। 2 अक्टूबर 1977 को राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम औपचारिक रूप से प्रारम्भ किया गया।

प्रौढ़ शिक्षा को विभिन्न विद्वानों और संस्थाओं ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है:—

- गाँधी जी के अनुसार, "समाज शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है। यह केवल साक्षरता के लिए नहीं है। इसमें सभी कुछ सम्मिलित है।
- मौलाना आजाद के अनुसार, "प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ वयस्कों को ही साक्षर बनाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, इसके अंतर्गत उस शिक्षा को भी सम्मिलित कर देना चाहिए, जो भारत के प्रत्येक नागरिक को लोकतांत्रिक व्यवस्था का विवेकपूर्ण सदस्य बना दे।"
- श्री के जी सैयदैन के अनुसार, "प्रौढ़ शिक्षा में राजनीतिक और नागरिक एवं नैतिक शिक्षाएँ भी सम्मिलित है।"
- एस. एन मुकर्जी के अनुसार, "भारत में प्रौढ़ शिक्षा के दो पक्ष है — 1. प्रौढ़ साक्षरता अर्थात उन लोगों के लिए जो स्कूल नहीं गए 2. पढ़े-लिखे प्रौढ़ों की निरंतर शिक्षा।

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Adult Education)

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्यों को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है -

(A) व्यक्ति के विकास के दृष्टिकोण से,
(B) सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से।

(A) व्यक्ति के विकास के दृष्टिकोण से :-

इसमें निम्नलिखित उद्देश्य आते हैं —

1. उपचारात्मक (Remedial) :— प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य स्कूली शिक्षा की उस कमी को दूर करना है जिसके कारण बचपन में प्रौढ़ स्कूल नहीं जा सके।

2. स्वास्थ्य रक्षा :- प्रौढ़ों का स्वास्थ्य और स्वास्थ्य रक्षा के सिद्धान्तों की जानकारी देकर रोगों को दूर करना।

3. व्यावसायिक निपुणता :- नगर क्षेत्रों में प्रारंभिक वाणिज्य या तकनीकी शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और कुटीर उद्योग संबंधी शिक्षा दिलाकर व्यक्ति की व्यावसायिक कुशलता बढ़ाना।

(4.) अवकाश का सदुपयोग :- अवकाश को उचित शिक्षा देकर समय का सदुपयोग सिखाना और सामाजिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना। प्रौढ़ों को सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

(5.) सांस्कृतिक :- प्रौढ़ों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी देना और गर्व अनुभव कराना।

(6.) व्यावहारिक कुशलता :- प्रौढ़ शिक्षा का लक्ष्य दैनिक जीवन में व्यक्ति की व्यावहारिक कुशलता बढ़ाना है।

(7.) आत्म विकास :- प्रौढ़ शिक्षा प्रौढ़ों को आत्म-विकास के अवसर प्रदान करती है।

(B) समाज के दृष्टिकोण से सामाजिक शिक्षा के लक्ष्य :- इस प्रकार हैं —

(1.) सामाजिक एकता का बढ़ना :- प्रौढ़ शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण का इस प्रकार विकास करने में सहायता देती है कि वह भाषायी, धार्मिक, प्रांतवाद,

व्यक्तिवाद आदि भेदों से ऊपर उठ सके।

(2.) राष्ट्रीय साधनों का परिरक्षण और सुधार :- प्रौढ़ शिक्षा, कार्यकर्ता की उत्पादक शक्ति को उन्नत करके राष्ट्रीय उत्पादन को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक होती है।

(3.) सहयोगी श्रम और संस्थाओं का निर्माण :- प्रौढ़ शिक्षा सहयोग, आत्मबल, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास कर व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वे सहयोगी संस्थाओं के निर्माण में सहायक हो सके।

(4) नागरिक की जिम्मेदारियों को निभाना :- प्रौढ़ शिक्षा व्यक्ति में उन गुणों का विकास करती है, जिनसे वह सामाजिक, नागरिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्रभावपूर्ण ढंग से निभा सके।

(5.) व्यावहारिक बनाना :- प्रौढ़ों में अपनी परंपरागत मान्यताओं को बनाए रखना और उन्हें विकसित करना तथा अपनी संस्कृति के प्रति उचित और गौरव अनुभव करना और लोगों को प्रगति तथा परिवर्तन के प्रति व्यावहारिक बनाना भी प्रौढ़ शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

प्रौढ़ शिक्षा के कार्य (Functions of Adult Education)—

1. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा व्यक्ति की स्कूल से वंचित रहने के कारण कमियों को दूर करना।
2. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना एवं उसका विकास करना।
3. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा व्यावसायिक दक्षताओं के दृष्टिकोण का निर्माण करना।
4. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना।
5. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को सामाजिक जीवन में भाग लेने के लिए तैयार करना।
6. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को व्यवसायिक कुशलता बढ़ाना
7. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को अधिकारपूर्ण कौशलों में व्यावसायी करना तथा उनका विकास करना।
8. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को नई व्यावसायी दशाओं बदलती हुई परिस्थितियों से परिचित कराना।

9. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा विज्ञान तथा तकनीकी की यथासंभव व्यावहारिक जानकारी कराना।

10. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को पंचवर्षीय योजनाओं की जानकारी कराना।

11. प्रौढ़ों को प्रेरित करना कि वे अपने बच्चों को स्कूल अवश्य भेजे, तथा इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में इनका योगदान प्राप्त करना।

12. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को अवकाश के समय का सदुपयोग करना सिखाना।

13. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ो को नेतृत्व का मान करना सिखाना।

14. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों में नेतृत्व के गुणों का विकास करना।

15. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा उनमें इस प्रकार के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना जिससे वे अंधविश्वास को छोड़ सके।

16. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का दृष्टिकोण निर्माण करना।

17. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों में संकीर्णता (भाषायी, प्रांतीय, क्षेत्रीय, जातीय) को दूर करने का दृष्टिकोण निर्माण करना।

18. प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों को नैतिक मूल्यों का आदर करना, बताना तथा जीवन में उन्हें धारण करने के लिए प्रेरित करना।